चेतावनियाँ

कुछ रोज़ेदारों से होने वाली ग़लतियों या कमियों पर

[*हिन्दी*]

تنبيهـــات على أخطاء أو نقائص تقع من بعض الصائمين

[اللغة الهندية]

लेख

शैख़ अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अल-जिब्रीन

فضيلة الشيخ عبد الله بن عبد الرحمن الجبرين

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

ترجمة: عطاءالرحمن ضياء الله

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

مراجعة: شفيق الرحمن ضياء الله المدني

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

الرياض - المملكة العربية السعودية

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1428-2007

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمدلله وحده، وصلى الله على من لا نبي بعده محمد وعلى آله وصحبه .

१. फर्ज़ (अनिवार्य) रोज़े के लिए रात ही से या फज्र के निकलने से पूर्व ही नीयत न करना, यद्यपि पूरे रमज़ान के लिए केवल एक ही नीयत पर बस कर सकते हैं।

२. सुबह (फज्र) की अज़ान के साथ-साथ या उस के पश्चात तक खाना और पीना, यद्यपि कुछ मूअज़्ज़िन सावधानी के तौर पर कुछ पहले ही अज़ान दे देते हैं।

३. फज्र से एक या दो घंटे पूर्व ही सेहरी कर लेना, जब कि रोज़ा खोलने में शीघ्रता करने और सेहरी को विलम्ब करने की तरग़ीब आई है।

४. अधिकांश लोगों का खाने पीने में सीमा से बाहर निकल जाना (फूजूल ख़र्ची करना) हालांकि यह उस हिकमत के विरूद्ध है जिस के लिए रोज़ा को मश्रूअ (वैद्ध) क़रार दिया गया है अर्थात भूखा रहना जिस के कारण ख़ुशूअ (नम्रता और विनय) उत्पन्न होता है।

५. आलस्य या नींद या निरर्थक और बेकार चीज़ों में व्यस्त होने के बहाने जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने में कोताही करना, जैसे कि ज़ुहर और अस्र की नमाज़ में (कुछ लोग केताही करते हैं)

६. रमज़ान के दिन और रात में तुच्छ, बुरी बातों, (कामुक एंव उत्तेजनाशील बातों) झूट बोलने, चुग़ली और ग़ीबत से ज़ुबान की सुरक्षा न करना।

७. खेलने कूदने, फिल्में, खेल-कूद और पहेलियाँ देखने और सड़कों और गलियों में घूमने फिरने में शुभ और सुअवसरों को गवाँ देना।

८. रमज़ान में अधिक और कई गुना पुण्य और नेकियों वाले कार्यों जैसे कि दुआयें, ज़िक्र व अज़कार, कुरआन पढ़ने और नमाज़ों की मुअक्कदह सुन्नतों आदि में कोताही और आलस्य करना।

९. जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ न पढ़ना, जब कि उसे इमाम के साथ पढ़ने की (हदीस में) तरग़ीब आई है यहाँ तक कि इमाम नमाज़ से फारिग़ हो जाए ताकि उस के लिए पूरी रात क़ियाम करने (पूरी रात तहज्जुद पढ़ने) का सवाब लिखा जाए।

१०. यह देखा ताजा है कि रमज़ान के महीने के आरंभ में नमाज़ियों और क़ुरआन पढ़ने वालों की संख्या अधिक रहती है फिर महीने के अन्त में अभाव और कमी हो जाती है, हालांकि महीने के अन्तिम दस दिनों को महीने के प्रारंभिक दिनों पर विशेषता प्राप्त है।

११. क़ियामुल्लैल जो कि अन्तिम दस रातों के साथ विशिष्ट है, उसे छोड़ देना। जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अन्तिम दस रातैं आरंभ होती थीं तो रात जागते थे, अपने घर वालियों को जगाते थे, अधिक स्फूर्ती दिखाते और कमर कस लेते थे।

१२. रोज़े की रातों को देर तक जागना और फिर फज्र की नमाज़ पढ़े बिना सो जाना, चुनाँचे कुछ लोग उसे चाश्त के समय (दिन चढ़ने के बाद) ही पढ़ते हैं, यह इस फरीज़े की अदायगी में आलस्य और कोताही है।

१३. माल व धन में कंजूसी करना और उसे हाजतमंदों (दरिद्र एंव दीन व्यक्तियों) पर खर्च न करना जबकि वह रमज़ान में अधिक प्रयाप्त होते हैं। बावजूद इस के कि इन शुभ दिनों में दान करने का प्रतिफल कई गुना बढ़ा दिया जाता है।

१४. अधिकांश लोगों का अपने माल व धन का संपूर्ण रूप से ज़कात देने में सावधानी और चिंता न करना, जबकि ज़कात का आदेश नमाज़ और रोज़े के साथ-साथ ज़िक्र किया गया है, यद्यपि यह रमज़ान के साथ विशिष्ट नहीं है।

१५. रोज़े की अवस्था में दुआ (प्रार्थना, विनती) करने में ग़फलत और आलस्य करना, विशेषकर रोज़ा खोलते समय खाने पीने में व्यस्त होने के कारण (दुआ से गाफिल हो जाना), हालांकि इस के विषय में हदीस आई है कि रोज़ा इफ्तारी के समय रोज़ेदार की दुआ रद्द नहीं की जाती।

१६. रमज़ान में एतिकाफ की सुन्नत को गवाँ देना विशेषकर अन्तिम दस दिनों में, बावजूद कि किताब व सुन्नत में इस का उल्लेख हुआ है।

१७. बहुत सी स्त्रियों का बन ठन कर, बनाव सिंगार कर के और सुगंधित हो कर मस्जिदों के लिए निकलना, जब कि यह फित्ने का कारण है।

१८. रमज़ान की रातों में स्त्रियों को विदेशी ड्राईवरों के साथ बिन महरम के और अधिकतर बिना आवश्यकता के बाज़ारों में जाने की आसानी और छूट देना।

१९. ईद की रात और उस के दिन में नमाज़े ईद से पहले तथा ज़ुलहिज्जा के (प्रारंभिक) दस दिनों में तक्बीर की सुन्नत को छोड़ देना, जब कि क़ुर्आॅन में इसका आदेश आया हुआ है।

२०. ज़कातुल-फित्र को विलम्ब से निकालना, जब कि सुन्नत (हदीस) उसे ईद के दिन नमाज़ से पहले पहले निकालना अनिवार्य क़रार देती है। और ईद से एक या दो दिन पहले निकालना जाइज़ है।

وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وصحبه وسلم.

अनुवादक
(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com